sankalp1:arunjaity.qxd 9/26/2010 8:38 PM Page 96

**वर्तमान राजनीतिक प्रक्रिया द्वारा राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण के लक्ष्य की पूर्ति तो दूर, बची-खुची राष्ट्रीय एकता भी खतरे में पड़ गई है। इस संकट के लिए किसी विशिष्ट विचारधारा, दल अथवा व्यक्ति विशेष को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। यह संकट प्रचलित राजनीतिक कार्यशैली की ही देन है।**

गई। परिणामस्वरूप गत 30 वर्ष में सामाजिक, शैक्षणिक या राष्ट्रीय जीवन के अन्य किसी भी क्षेत्र में नेतृत्व का विकास नहीं हो पाया। सत्ता के आंगन में प्रवेश करना ही प्रत्येक का लक्ष्य बन गया। संसद और विधानसभाओं की 5000 सीटों के लिए छीनाझपटी और जोड़तोड़ का नाम ही स्वाधीन भारत की राजनीति बन गयी। येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीतना, विधानसभा या लोकसभा में प्रवेश हो जाने के पश्चात् मंत्रिपदों की ओर बढ़ने का रास्ता खोजना, यही है संक्षेप में राजनीतिक कार्यकर्ता की प्रातः से रात्री तक की दौड़धूप का मर्म। सत्ता प्राप्त करना और प्राप्त सत्ता को किसी भी प्रकार अपने हाथ से निकलने न देना,

यही आज अधिकांश भारतीय राजनीतिज्ञों की मुख्य प्रेरणायें हैं। स्वाभाविक ही, इस मानसिकता ने ऐसी कार्यप्रणाली को जन्म दिया, जिसमें जनजीवन से प्रत्यक्ष नाता जोड़कर जनसहयोग से सामाजिक आर्थिक परिवर्तन की प्रक्रिया को खड़ा करने की बजाय सस्ती प्रदर्शनकारिता, विरोध के लिए विरोध एवं जोड़-तोड़ के द्वारा चुनाव जीतने को ही सर्वोपरि महत्व दिया जाने लगा। प्रेस, प्लेटफार्म और प्रोटेस्ट पर आधारित कार्यप्रणाली ने ऐसे-ऐसे नेताओं को उभारकर सामने लाया है जो राष्ट्र के सामने विद्यमान सामाजिक-आर्थिक समस्याओं में गहरे पैठकर उनका व्यावहारिक हल खोजने की बजाय भेदों पर पलने वाली, संकुचित निष्ठाओं को उभाड़ने, जनमानस को भ्रमित करने के लिए आकर्षक वादों और उत्तेजक नारे उछालने को ही राजनीतिक सफलता की एकमात्र कुंजी मानने लगा है। निश्चय ही, जोड़तोड़ और आंदोलन की राजनीतिक कार्यशैली में से उभरे हुए नेतृत्व के हाथों राष्ट्रनिर्माण के लिए सत्ता का रचनात्मक उपकरण बन पाना असंभव है। राष्ट्रनिर्माण हेतु सत्ता का रचनात्मक प्रयोग करने के लिए आवश्यक है कि सत्ताधारी को प्रत्यक्ष जनसहयोग, गहन चिन्तन एवं रचनात्मक प्रयोगों के माध्यम से समस्याओं के स्वरूप एवं उनके हल का व्यवहारिक ज्ञान हो। दुर्भाग्य से वर्तमान राजनीतिक कार्यशैली में इस रचनात्मक दृष्टि की कोई उपयोगिता ही नहीं रह गई, क्योंकि येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीत जाना ही राजनीतिक सफलता की एकमात्र कसौटी बन गई है।

इसका ही परिणाम है कि विगत तीस वर्षों में राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण की दिशा में स्वाधीनता की मूल प्रेरणाओं एवं आदर्शों के अनुरूप आधारशिला तो रख नहीं पाये, उल्टे स्वतंत्रता-संग्राम के दौरान उपजी राष्ट्रीय एकता को दुर्बल बनाने तथा सामाजिक एवं धार्मिक भेदों का पोषण करने की, भारतीय

# नए अवतार में नानाजी

**सत्ता और दलों की राजनीति का विकल्प ढूँढने वाला समग्र क्रान्ति आन्दोलन भी मानो सत्ता और दलगत राजनीति की भंवर में फंसकर रह गया। वरिष्ठ नेतृत्व की देखा-देखी समग्र क्रान्ति आंदोलन की रीढ़ कहलाने वाली युवा शक्ति भी टिकटों और मंत्रिपदों के लंबे क्यू में खड़ी हो गई।**

राजनीतिज्ञों द्वारा भयंकर भूल हो रही है। अब तो यह लगने लगा है कि सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक भेद कायम रखने में ही राजनीतिज्ञों का निहित स्वार्थ निहित है। अतः वर्तमान राजनीतिक प्रक्रिया के द्वारा राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक पुनर्निर्माण के लक्ष्य की पूर्ति तो दूर, बची-खुची राष्ट्रीय एकता भी खतरें में पड़ गई है। वस्तुतः इस संकट के लिए किसी विशिष्ट विचारधारा, दल अथवा व्यक्ति विशेष को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। यह संकट प्रचलित राजनीतिक कार्यशैली की ही देन है।

## समग्र क्रान्ति आंदोलन क्यों

सर्वप्रथम लोकनायक जयप्रकाश जी ने राष्ट्र के इस रोग की जड़ को पकड़ा। उन्होंने अनुभव किया कि विगत 30 वर्ष में हमारी राष्ट्रीय यात्रा एक भटकाव की यात्रा रही है। उसका स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान निरूपित राष्ट्रीय लक्ष्यों से संबंधविच्छेद हो चुका है और वह सत्ता के चारों ओर घूमने वाली बाँझ शैली के भंवर में फंस चुकी है। उसके भीतर से श्रेष्ठ, अनुशासित एवं उद्देश्यपूर्ण राष्ट्रजीवन का निर्माण असंभव है। इसलिए लोकनायक ने संपूर्ण क्रान्ति का नारा देकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में राष्ट्रीय आदर्शों की पुर्नव्याख्या की आवश्यकता प्रतिपादित की। लोकनायक जयप्रकाशजी के संपूर्ण क्रान्ति आंदोलन का लक्ष्य एक दल को हटाकर किसी दूसरे दल को सत्तारूढ़ करना नहीं था, अपितु सत्ताभिमुखी रानीतिक कार्यशैली का स्वस्थ विकल्प ढूँढना था और एक प्रबल रचनात्मक आंदोलन की सृष्टि कर राजशक्ति पर रचनात्मक लोकशक्ति की महत्ता को पुर्नप्रतिष्ठित करना था।

जयप्रकाशजी के रूप में स्वतंत्रता संग्राम की प्रथम पंक्ति में लड़ने वाले एक तपोपूत सत्ताविमुख, दल से निरपेक्ष एवं निस्पृह व्यक्तित्व के मैदान में कूद पड़ने से जनमानस में विशेषकर युवा पीढ़ी में अभूतपूर्व आशावाद एवं उत्साह का संचार हुआ। जयप्रकाशजी जिन्हें राजनीतिक दृष्टि से लगभग निष्प्राण घोषित कर दिया गया था, रातों-रात भारत के सार्वजनिक जीवन के आकाश पर सबसे प्रबल शक्ति, ध्रुव बनकर उदित हो गये। उनका उपहास करने वाले राजनीतिज्ञों एवं दलों को भी उनके पीछे खड़े होने का निर्णय लेना पड़ा। जयप्रकाशजी का यह आकस्मिक पुनरोदय इस बात का प्रमाण है कि राष्ट्रीय मानस विगत 30 वर्ष की राजनीतिक कार्यशैली एवं उसमें से जन्मी राजनीतिक संस्कृति के प्रति तिरस्कार से भरा हुआ था और उसके विकल्प की खोज में व्याकुल था।

जयप्रकाशजी का व्यक्तित्व जुड़ जाने के कारण भारतीय राजनीति को कुछ समय के लिए पुनः एक नैतिक अधिष्ठान प्राप्त हुआ। उनके नैतिक बल के कारण ही प्रबल जनान्दोलन की सृष्टि हुई, सत्ता का आसन डोल गया और आत्मरक्षा में उसे लोकतंत्र की पीठ में आपातस्थिति की घोषणा का छुरा भोंकने का सहारा लेना पड़ा। आपातकालीन अत्याचारों की तीव्र प्रतिक्रिया तथा जे. पी. के आंदोलन से उत्पन्न नैतिक वातावरण के फलस्वरूप ही केन्द्र में सत्ता परिवर्तन का अभूतपूर्व व अकल्पित चमत्कार घटित हो सका।

## सत्ता बदली पर कार्यशैली वही

जयप्रकाशजी के नेतृत्व और समग्र क्रान्ति आंदोलन की पृष्ठभूमि में घटित सत्तापरिवर्तन ने राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के प्रति एक बार फिर वैसी ही उमंग, उत्साह एवं आशावाद का वातावरण उत्पन्न कर दिया था जैसा कि सन् 1947 के पूर्व स्वतंत्रता प्राप्ति के